

नवल जोशी

सुमित्र प्रकाशन, रसाला रोड, जोधपुर – 342 006

सांझ-सवेरा रात-दिन

प्रो. प्रेमशंकर श्रीवास्तव श्रेष्ठ साहित्यिक सृजन
पुरस्कार – 1999 से समादृत काव्य कृति

नवल जोशी

सुमित्र प्रकाशन
रसाला रोड़, जोधपुर – 342 006

सिटिजन्स सोसायटी फॉर एज्यूकेशन, जोधपुर के सहयोग से प्रकाशित

प्रथम सस्करण – 2000 ई.

प्रकाशक : सुमित्र प्रकाशन, रसाला रोड, जोधपुर – 342 006
फोन : (घर) 511834 (ऑ.) 510663

विक्रय केन्द्र
● मनोहर जोशी 'पत्रकार'
मंगलपुरा, पोकरण – 345021
फोन : 22624

● अनिल अनवर
33, व्यास कॉलोनी
एयरफोर्स, जोधपुर – 342 011
फोन 626917

शब्द सज्जा : स्टाईलो कम्प्यूट
दो कोटा मार्ग, जोधपुर

मुद्रक : भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर

आवरण : महेन्द्र जोशी

मूल्य : 80/– (अस्सी रुपये)

सांझ - सवेरा रात - दिन

हिन्दी काव्य संग्रह — नवल जोशी

वन्दन

शून्य-सचित हृदयघट में
चेतना के भाव भर दो
शान्तिमय-सुखमय-समृद्धिमय,
सृष्टि को साकार कर दो
हे महादेवि !
सकल भूलोक-वृत्त आलोकमय हो
तिमिर-आच्छादित जगत में
ज्योति का संचार कर दो

भोग्य क्षणों की अनुभूतियों का हृदयस्पर्शी चित्रण

पिछले लंबे समय से सतत साहित्य साधनालीन श्री नवल जोशी एक कवि, नाटककार, व्यंग्यकार, के रूप में साहित्य जगत मे चर्चित साहित्यकार हैं। आपकी पूर्व प्रकाशित राजस्थानी काव्यकृति " हूं नीं बोलू धोरा बोलै " पर्याप्त ख्याति प्राप्त रही। संप्रति आप जोधपुर से प्रकाशित होने वाले " पुष्करणा सन्देश " का उत्कृष्ट सपादन कर रहे हैं। इनके लिखे राजस्थान की सुप्रसिद्ध लोक – प्रेमगाथा " मूमल महेन्द्रा" के नाट्य रूपान्तरण का अनेक नगरो में मंचन के साथ – साथ एच.एम.वी से रिर्कोडिग भी हो चुका है।

बहुमुखी प्रतिमा के धनी तरुण साहित्य साधक श्री जोशी राजस्थानी और हिन्दी मे समान रूप से साहित्य सृजन करते हैं। आज मेरा, आपका और विश्व का मानवीय जीवन कितना उर्ध्वमुखी तथा कितना पतनोन्मुखी हो रहा है, इस सत्य को क्रान्तदृष्टा कवि, कहानीकार,, साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से अनेकानेक साहित्यिक विधाओं में अभिव्यक्त कर विश्व मनीषा को अवगत कराते हैं, यथार्थ से साक्षात्कार कराते हैं।

" साझ–सवेरा, रात–दिन " के घेरे से घिरा, उसी से जुडा – बिछुडा, पल – पल ही तो जीवन है और इन्ही के मध्य शौर्य – कायरता, भली–बुरी, हार–जीत, सुख–दुख जन्य घटनाएं ही मानव जीवन का इतिहास है। प्रत्येक पल–क्षण को प्राणी जगत जन्म से मृत्यु तक कैसे भोगता, जीता और अनुभव करता है, यह भोग्य क्षणों की अनुभूति व्यष्टि और समष्टि स्तर पर बहुत कुछ समान होते हुए भी कुछ–कुछ अलग–थलग अवश्य है। अनुभूति और अभिव्यक्ति की यह विलगता ही व्यक्ति विशेष की अपनी मौलिकता है।

विभिन्न रितुओ, अनेकानेक पतझडो–बसन्तो, अकालो –सुकालो, आल्हाद – रुदन, सुख –दुख, अधकार–प्रकाश, कदाचार – सदाचार के सांझ– सवेरा, रात – दिन की मलयानिल और लूवो को झेलता नवल जोशी का सुकुमार कवि हृदय जिस प्रकार अपने भाव व्यक्त करता है उनमे उसकी माटी, माटी की मधुर महक, उसका परिवेश, उसका जीवन्त जीवन, अतीव प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत कृति मे रूपायित हुआ है। सहजता, सरलता और सरसता का गुण इन रचनाओ मे स्पष्ट लक्षित होता है। वह अपने कथ्य, अभिव्यक्ति मे पूर्ण रूपेण ईमानदार है। शिल्प सौष्ठव उसका अपना निजू है। शब्द–शब्द की धडकन, श्वास–प्रश्वास मे उसके समग्र परिवेश, देखे–परखे और जीये हुए जीवन की झलक चित्रवत दिखाई देती है।

"सांझ–सवेरा रात–दिन "काव्य संग्रह तीन मुख्य भागो मे प्रस्तुत है –

प्रथम : "थूहर – आक – बबूल" :– इसमे हृदय स्पर्शी जीवन्त जीवन के स्थानीय रंग को रूपायित करने वाले 47 दोहे हैं। मूल सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति कवि की आस्था और इस सांस्कृतिक सौरम को दिनोदिन प्रदूषित करती राजनैतिक विद्रूपता का यथार्थ चित्रण इन दोहों में अत्यन्त खूबसूरती और मावपूर्ण रीति से हुआ है।

द्वितीय · "जीवन ढोने के लिए " :– इसमें बहुरगी मावभरी 28 गजलें हैं, जो सघर्षशील जीवन के विविध पक्षो को सहेजते–संवारते हुए मानवीय मावनाओं को कुरदने में सक्षम हैं।

तृतीय :" सारा दिन प्रतिकूल " – अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियों के बसन्त –पतझड, सुख – दुख जन्य मावों को प्रस्तुत करने वाली 16 रचनाए हैं, जिनमें जीवन के सूक्ष्म सवेदनशील क्षणों का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ हैं।

समग्र काव्य का अध्ययन करने पर विश्वास होता है कि कवि नवल के अन्तरमन में प्राचीन सांस्कृतिक परिवेश, संस्कृति, सामाजिक अवधारणाओ के प्रति यथोचित गरिमामय आस्था है, तो वर्तमान युग के अशोमन एवं कदाचार को सशक्त वाणी देने की सहज – सरल व्यजनापरक शक्ति भी।

इस काव्य सग्रह से पूर्व प्रकाशित श्री नवल का काव्य संग्रह " हू नी बोलू धोरा बोलै " भी राजस्थानी साहित्य की उत्कृष्ट काव्य कृति है, पर प्रस्तुत काव्य संग्रह मे उनके सृजन और चिंतन की ऊंचाइयां और स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

अपनी ढाणी, गांव, शहर, नगर,, राज्य, देश और विश्व के सांझ सवेरा रात – दिन की सम–विसम, सुख – दुख जन्य परिस्थितियों मे जूझते जीवन के मूल तत्वो से जुडी इन कविताओ के माध्यम से जहां सुधि पाठको को माटी से जुडे यथार्थ जीवन का सच्चा साक्षात्कार होगा, वही समग्र रूप से गुणी विद्वान श्री नवल जोशी के इस अभिनन्दनीय, अभिनव काव्य संग्रह का अध्ययन करके कवि के कृतित्व का आदर कर प्रोत्साहित भी करेगे।

साहित्य सृजन एक सतत साधना है। आशा करता हू श्री नवल जोशी मा सरस्वती की साधना में लीन रहते हुए अपने नित नवीन कविता, काव्य – सुमन–संग्रह समर्पित करते रहेगे। मैं उनके उच्च से उच्चतर सृजन की कामना करता हुआ, विश्वास व्यक्त करता हू कि इस उत्कृष्ट काव्य कृति का सर्वत्र समुचित आदर होगा।

साहित्य साधना सदन
केला पाड़ा, जैसलमेर

दीनदयाल ओझा

अनुक्रम

थूहर - आक - बबूल

खुशहाली को खा गया   इस युग का बदलाव
भोलापन अब गांव का लगने लगा छलाव ।

गांव तोडता जा रहा   सभी पुराने बंध
सौंधी मिट्टी में घुली   कोलतार की गंध ।

नयी सदी की दौड मे   दौडा नगे पाव
उलझ गयीं पगडडियां   भटका मेरा गाव।

हरियाली को रौंदता   बढा नगर विकराल
सडक बिछाती जा रही   ढाणी ढाणी जाल।

हदबंदी की हथकड़ी   पटवारी के दांव
द्वार कचहरी के पडा   भूखा-प्यासा गांव।

पैमाइश जब जब हुई   खुले पुराने घाव
मौके पर बगला खड़ा   नक्शे में तालाब।

कुर्क मुकदमों में हुए खेत और खलिहान
सिर्फ अंगूठा छापकर राजी हुआ किसान।

घन बादल जब-जब घिरे हलधर चढ़ा जुनून
पार साल सूखा पडा अबके बरसा खून ।

पिता-पुत्र को बांट कर तलवारों की धार
मेड हमारे खेत की रक्त पियै हरबार।

प्रजातंत्र की गांव में • नींव बडी मजबूत
सबकी छाती पर चढ़ा राजनीति का भूत।

गांव धरम चौपाल का हुक्का रहा यतीम
मुफ्त इलेक्शन में बटी मदिरा और अफीम।

पंचायत का फायदा झगड़ा लूट-खसोट
कौन्सिलों में डोलता रहा कागजी वोट।

पढ़े लिखे बिकने लगे अब कौडी के भाव
जिसकी लगी न नौकरी उसने लडा चुनाव।

सीलिंग में जब्ती हुआ ठाकुरसाही जोड़
सनद किसानों को मिली पथरीली आगोर।

गोचर में घुंघरू बजे बौरा गये बबूल
बिन पानी महुआ फला मेरे गाव की भूल।

भूल गयीं पनिहारियां पनघट की तासीर
नहीं डूबने के लिये बचा कुंएं में नीर।

रीते मन रीते नयन रीते गागर-ठांव
सरकारी नल रो रहा टप-टप आंसू गांव।

भारत की वीरांगना मचा गयी कुहराम
हैण्डपम्प पर छेडकर 'पानी-पत' संग्राम।

गज घूंघट की ओट में नैन नशीली मार
रस-अमृत बरसै नहीं अब बरसै विषधार।

मठ मंदिर जोगी जती नागा और मलंग
दिन धूणी चिमटा चिलम रात रति रस रंग।

उल्टी चली बयार में पीत हुए सब पात
बूढ़े बरगद की जड़ें हिलने लगीं हठात।

बाज और बगुले बहुत कोयल-मोर न एक
हर बबूल की डाल पर उल्लू बैठा एक।

कूप कबूतर ना रहे गिद्ध बसे तालाब
चील झपट्टा मारती घूंघट वाले ठांव।

गांधी का सपना हुआ साबित कच्चा सूत
खादी को धब्बा लगा लगी गांव को छूत।

बदली-बदली बादली बदले ताल-तड़ाग
कल तक कच्ची धूप थी आज धधकती आग।

गांव गली धूंवा-धुंवां बस्ती-बस्ती आग
बांसो का जगल हुआ आज गुलाबी बाग।

बनजारा घर-घर फिरै - कौन करे विश्वास
अंधो के इस गांव में तूं बेचै उजियास।

मान सरोवर में चुगे मोती कागा-वंश
दाना - चुग्गा डालकर परवश कीन्हा हंस ।

सांस अगर चलती रही लायेगी तूफान
बन्द हवाओं को किया बौराया इंसान।

पाख कटीं सांसे घुटीं पग डोरी गलफांस
पंछी पिंजरा ही भला तज उडने की आस।

आम झरै पीपल कटे मुरझाये तरु फूल
आंगन - आंगन फैलते थूहर - आक - बबूल।

सांझ सवेरा रात दिन पानी धूप बयार
आधे गिरवी रख दिये आधे गये उधार।

जल सूखा रूखी मही नंगे हुए दुकूल
उम्र वीरानी मरुथली छाया मिली न कूल।

उम्र झुलसती दोपहर सांस बिखरती धूल
ज्यों - ज्यों मुट्ठी में भरी त्यों-त्यों फिसली धूल।

सांसों का सौदा हुआ लाशों का व्यापार
सिकीं चिता पर रोटिया कफन ढंकै परिवार।

एक हाथ में सुमरनी दूजे हाथ कटार
मत-मधुकरी मांगत फिरै कलयुग का करतार।

पगलाये परिवार में मुंह खोले का पाप
कोई बेटा ना रहा सबके सब है बाप।

हम ऊंचे नीचे हमीं हम सच्चे हम खोट
जब जी चाहे बांट लो हम सरकारी वोट।

कुछ करैत कुछ कोबरे काले, अश्व पछाड़
एक हि बाबी मे घुसे करे उखाड़-पछाड।

कुछ करैत कुछ कोबरे अजगर और भुजंग
कुरसी चन्दन काठ की संसद एक सुरंग।

मदिर मस्जिद पालकी गिरजाघर गुरूधाम
तेरे कारागृह सभी उसका खुला मुकाम।

मदिर मे घंटे बजे मस्जिद हुई अजान
वही ईंट पत्थर वही वही राम - रहमान।

एक हाथ में आरसी दूजे हाथ सलाख
मजहब ने फोडी सदा खुली हुई हर आंख ।

सारा जग अल्लाह का ईश्वर का परिवार
अपनी ही गर्दन मियां अपनी ही तलवार।

कुरआनी भाले हुए हुए त्रिशूली वेद
खून मगर मिल कर बहा रहा न कोई भेद।

जर्रे - जर्रे में खुदा कण -कण मे भगवान
जिस पत्थर से सिर फटा उसको भी पहचान।

बन्दे बहते खून में हिन्दू तुर्क टटोल
यह मदिर की ईंट है या मस्जिद की चोल।

जीवन ढोने के लिये

जिन्दगी भूल है कूल के वृक्ष सी

खुद से खुद को छुपाने से क्या फायदा
बेवजह मुस्कुराने से क्या फायदा

वक्त नासूर है वक्त ही औषधि
दिल को मरहम लगाने से क्या फायदा

झौपड़े तो अंधेरों के अभ्यस्त हैं
रास्ते जगमगाने से क्या फायदा

रोटियां जिन निगाहों ने देखी नहीं
उनको टीवी दिखाने से क्या फायदा

जिनको जीना था, बेमौत मारे गये
बुत को कंधा लगाने से क्या फायदा

घर मजूरों के जलते हुए देखकर
चार आंसू बहाने से क्या फायदा

शक्ल की सलवटें आप इतिहास है
गाल यूं ही फुलाने से क्या फायदा

जिन्दगी भूल है कूल के वृक्ष सी
धूल की तह जमाने से क्या फायदा

वक्त आगे बढ़े हम पिछड़ते रहें
ऐसा बदलाव लाने से क्या फायदा

कुछ समझ मे न आये अगर आपको -
तो गलत गुनगुनाने से क्या फायदा

झडबेरी बस्तियां

रोशन हुई थीं कब हुई अंधेरी बस्तियां
किस शख्स ने उजाडी तेरी मेरी बस्तियां

आमो की पीपलो की गुलाबो की बस्तियां
काटा हुई हैं सूरज के झडबेरी बस्तियां

सूरज गया तो माग मे सिंदूर भर गया
हर आततायी रात ने बिखेरी बस्तियां

मोरो के पाव कोयलों के कंठ बिध गये
गिद्धो के दल ने हर तरफ से घेरी बस्तियां

नदियो के पाट काट के सडको के किनारे
पत्थर बसा रहे हैं अब घनेरी बस्तियां

हर युग के पारितोष ने कर कमल कर दिये
जब चित्त से चितेरे ने चितेरी बस्तियां

गांव का चेहरा बदल गया

सालों के बाद सामने पाया तो डर गया
ऐसा नहीं था गाव का चेहरा बदल गया

लगता नहीं कि आग कलेजों में लगी है
बस दूर से धुएं को निहारा निकल गया

जगल मे घने बांस थे टकराके जल गये
सदियों पुराना नीम जडो से उखड गया

गागर लिये भटकतीं हवेली से हवेली
पनिहारिनो का हर जगह पानी उतर गया

खेतो में खुद गयीं है खाइयां ही खाइयां
जब-जब जमीं पे पांव जमाये फिसल गया

हर ठूंठ हुए हाथ में ठप्पा है वोट का
जिस हाथ ने कुदाल उठाई थी कट गया

जब कोई सरपंच बदला गांव में

दोपहर अलसाये जिनकी छांव में
सारे पीपल कट चुके अब गांव में

हैं बबूलो की कतारे हर तरफ
लौट जा कांटे चुभेंगे पांव में

एक पगडंडी पे पगडंडी चढी
ताल नदियां कूप ठहरे ठांव में

ढाणियों में गोटियां बिखरीं पडी
खेत सारे खो गये हैं पांव में

धूप में आगन झुलसता देखकर
आ रहा उबलाव खाली ठांव में

गोरियां नागिन सी बल खाती हुई
कर रहीं विष की जुगाली गांव में

बन्द मुट्ठी से छलकती रोशनी
रात ज्यों औंधी हथेली गांव में

रात भर तेजाब बरसाता रहा
शहर का बादल उडा जो गांव में

घंटियां दिल्ली में क्यों बजने लगीं
जब कोई सरपंच बदला गांव में

टांगता है जो सवालात

हम भी ले जायेंगे सौगात उनके डेरे पर
काश हो जाये मुलाकात उनके डेरे पर

उनको आदत है बहकने की हमको मजबूरी
बात ठन जाये ना बेबात उनके डेरे पर

उनकी हर बात पे हर बार सिर हिला देंगे
काश बंटती रहे खैरात उनके डेरे पर

जख्म दिल मे थे दिमागों को सुन्न कर डाला
कोई सीखे ये करामात उनके डेरे पर

सब्र रखो कि कभी तुम भी काम आओगे
जब बिछेगी नयी बिसात उनके डेरे पर

सांस लेने लगा है कैसे देहरी का दिया
है बवंडर की शुरूआत उनके डेरे पर

किसकी गुस्ताखी है आंसू बटोर कर लाये
कौन करता है खुराफात उनके डेरे पर

उनकी नजरों मे सिर्फ एक सिरफिरा है 'नवल'
टांगता है जो सवालात उनके डेरे पर

आदमी है या कोई ' एटम '

घर से निकलो तो यही मौसम दगा दे जायेगा
आजमालो दोस्ती का दम दगा दे जायेगा

जिसका कोई भी नहीं उसका खुदा भी ना रहा
पाल रक्खा आपने जो भ्रम दगा दे जायेगा

देशी सूरत पर विदेशी लग रही मुस्कान क्यो
आदमी है या कोई ' एटम ' दगा दे जायेगा

फिर कडी करदी सुरक्षा छापकर अखबार मे
सोगया सेनापति तो दम दगा दे जायेगा

खा गई हर हादसा विज्ञप्तियों की सुर्खियां
तो सुरक्षा आवरण का भ्रम दगा दे जायेगा

इस तरह यदि आदमी वोटो में ढलता ही गया
तो किसी दिन देश का परचम दगा दे जायेगा

भूख से कुत्ता मरा या आदमी

कुछ नहीं मालूम है हम क्या कहें
हर कोई मायूस है हम क्या कहें

कौन कैसे ढ़ो रहा है जिन्दगी
काल कितना क्रूर है हम क्या कहें

जाने कैसे पत्थरों की शक्ल में
ढल गया मजबूर है हम क्या कहें

सत्य सूली पर चढा है आज तक
न्याय का दस्तूर है हम क्या कहे

ज़ुल्म की चक्की मे पिसकर हड्डियां
हो रहीं क्यों चूर हैं हम क्या कहें

गाव की चर्चा हुई शहरों तलक
सडक की करतूत है हम क्या कहें

रात ढाणी में दरोगा क्यों घुसा
शर्म से मजबूर हैं हम क्या कहें

झौंपडा रोया हवेली चुप रही
हाकिमी मगरूर है हम क्या कहें

भूख से कुत्ता मरा या आदमी
दिन चुनावी दूर हैं हम क्या कहे

हजारों ठोकरें खाकर भी पेट खाली है

न कहीं तीर न तलवार निहत्थे देखा
खून इंसान की आंखों में उतरते देखा

हर खुली चोंच दोमुंही कैंची
पांख दर पांख करीने से कतरते देखा

हर एक शक्ल थमे युद्ध की तबाही सी
हर एक सांस में जीवन को बिखरते देखा

नदी का तीर था बरगद की घनी छांव तले
एक प्यासा था जिसे मैंने झुलसते देखा

खिडकियां बन्द थीं दरवाजे पे पहरा किन्तु
घर की दीवार मे एक अक्स उभरते देखा

न जाने किस तरफ उखडा हुआ पलस्तर है
कहां सूराख किसे किसने उतरते देखा

हजारों ठोकरें खाकर भी पेट खाली है
एक रोटी के लिये चाम उतरते देखा

हर एक ईंट बागी है

एक सपना था उजडते देखा
एक घेरा था सिमटते देखा

आंख जब बन्द थी उजाला था
आंख खोली तो कुहरते देखा

फिर कोई दाव ले गया अपना
खुद को हर बार फिसलते देखा

कौन अभिशाप है मोहल्ले को
हर पडोसी को बहकते देखा

घर की हर एक ईंट बागी है
आपने किसको निकलते देखा

हमने उडने की चाह जब भी
रखी, आपको पंख कतरते देखा

आजकल स्याह क्या सफेदी क्या
रंग पर रंग बदलते देखा

तुम परायों को दोष देते हो
हमने अपनो को मुकरते देखा

आस्तीनों में पले थे जो 'नवल'
उनको सीनों में मचलते देखा

सलीके से मेरा कत्ल हुआ है

नश्तर सा कोई दिल में बार -बार चुभा है
इस बार गनीमत है जरा दर्द हुआ है

हिलता है न डुलता है फकत मौन खड़ा है
चौराहे का स्टेच्यू मुझे अपना लगा है

खंजर चला न खून गिरा जिस्म बंटा है
कुछ ऐसे सलीके से मेरा कत्ल हुआ है

धर्मों में जातियों में बोलियो में बंटा है
दिल्ली के तख्त में जो एक चेहरा जड़ा है

संसद के बाद मुद्दा अदालत में उठा है
साबित करो कि द्रौपदी का शील लुटा है

अर्जुन का सारथि था कभी कृष्ण सुना है
इस बार कौरवों का वफादार बना है

तबाही का शौक रखता है

न चाद पर न कभी चांदनी के चेहरे पर
थमी निगाह तो गली के घुप्प अंधेरे पर

रोज अखबार में मरने की सूचना देकर -
भी सलामत रहे लानत है उस सवेरे पर

कैसे कह दें कि कौन दोस्त कौन दुश्मन है
कोई लिख दे ये बात आदमी के चेहरे पर

ममतयी खोल मे लिपटी है मोहब्बत की छुरी
बडे दुलार से काटे हैं जिसने सारे पर

वो आसपास की लपटों से कितना चौकस है
बांध रखता है जो कनात अपने डेरे पर

वह जो औरों की तबाही का शौक रखता है
भूल जाता है कि जिन्दा है . पर

क्यों सडी लाश पे चुनता है
तुझको रहना है इसी टांड

साझ ~ रात -

प्रश्न एक सांस की रिहाई का

आदमी चाल चल गया देखो
सारी दुनिया को छल गया देखो

शब्द की अपनी-अपनी परिभाषा
अर्थ कितना बदल गया देखो

खुदा के नाम की नुमाइश में
शान से जुल्म चल गया देखो

सिरफिरे मसखरों के जलसे में
एक जीवन कुचल गया देखो

इनकी नीयत थी उसकी मजबूरी
धर्म धोखे में पल गया देखो

प्रश्न एक सांस की रिहाई का
धर्म के नाम टल गया देखो

वक्त का रहनुमा सियासत के
चन्द वोटों में ढल गया देखो

टोपियां -धोतियां तो उजली थीं
राख चेहरे पे मल गया देखो

डर गया वक्त के विधानों से
न्याय सचमुच उथल गया देखो

जहाँ भी आग होगी

चिमनियों का नहीं शायद चिताओं का धुंआं होगा
मुझे लगता है इस बस्ती में फिर मातम हुआ होगा

तुम्हें मालूम है, इस जिन्दगी का मोल क्या होगा
वही तो जानता होगा जिसने माया दिया होगा

ठीक कहते हो इस बस्ती में बस लाशें ही लाशें है
खुदा जाने यहा पर किस समय जीवन रहा होगा

कभी कोई पुलिस का आदमी देखा नहीं फिर भी
ये कैसे मानलें इस गांव मे डाका हुआ होगा

यहां तो हर कोई सवेदना से शून्य लगता है
चलो भगवान से पूछें ये सब कैसे हुआ होगा

हंसा पाषाण बोला किसलिये अफसोस करते हो
तुम्हारा कोई हिस्सेदार भी तो कम हुआ होगा

तुम्हीं सोचो भला इन हड्डियों को कौन लूटेगा
डकैती तो वहीं होगी जहां पहरा हुआ होगा

पांच दशको से इस बस्ती ने केवल भूख देखी है
कहीं रोटी मिली होगी तभी झगडा हुआ होगा

नहीं होगी अगर चूल्हे में तो सीने में भडकेगी
जहां भी आग होगी उस जगह निश्चित धुंआं होगा

बारूद ढोने के लिये

सार्थक है हर समय सपने संजोने के लिये
हर कोई तैयार है हर·वक्त सोने के लिये

एक चूल्हा माड दूं इतनी जगह खाली नहीं
खेत हर तैयार है बिषबीज बोने के लिये

गठरिया संवेदनाओं की गटर में डालकर
पीठ हर तैयार है बारूद ढोने के लिये

अब फटी चादर कबीरा भी न सी पाये तो क्या
अंधे बहुत तैयार है सीने पिरोने के लिये

उम्र भर पाषाण पर जो खोपडी घिसता रहा
आज खुद तैयार है पाषाण होने के लिये

पांव शायद फिसल गया होगा

दर्द आहों में ढ़ल गया होगा
हिमालय भी पिघल गया होगा

जानता हूं किधर गया होगा
लौट आयेगा डर गया होगा

खाइयां पाटने को निकला था
गिरते-गिरते संभल गया होगा

उसने थामे तो रखी थी सीढ़ी
पांव शायद फिसल गया होगा

एक साया था भुतहला सिर पर
वो दुआओं से टल गया होगा

धूप में दो घड़ी की आतिश थी
अब पसीना निगल गया होगा

कल तलक जेब की जमानत था
खोटा सिक्का भी चल गया होगा

छत पे मेहमान बन के उतरा था
सांझ होते ही ढल गया होगा

जिसने भी देखा है खुद को

मेरी गली के मोड से वापस यूं ही ना मुड जाया कर
कभी - कभी तो हिम्मत करके अपने घर भी आया कर

बौराये कस्तूरी मृग सा कब तक व्याकुल डोलेगा
मेरी चौखट पर भी जोगी अलख जगाने आया कर

देखो तो कातिल झाडी में मैंने फूल खिलाये हैं
भौंरों की अठखेली से तूं अपना दिल बहलाया कर

जग कहता है जिसको पतझड एक हवा का झौंका है
सूखे पत्तों पर आंसू की बूदें कुछ टपकाया कर

लोगों ने अब तक केवल कीचड़ में पत्थर मारे हैं
अंधी रूहों को सरिता के तट तक तूं ले जाया कर

जिसने भी देखा है खुद को टुकडे-टुकडे पाया है
टूटे आईने में सूरत देख के मत घबराया कर

मेरे अकेलेपन में अक्सर मुझ से लडता रहता है
सांई अपने बन्दे को भी थोडा तो समझाया कर

शराफत ओढ़कर आये थे

सदा अपनों से अपनों को मिलाया यार होली ने
दिया है हर किसी को स्नेह का उपहार होली ने

बसन्ती फागुनी मौसम के हाथों भेजकर पाती
लिखी है जिन्दगी को प्रीत की मनुहार होली ने

दमकती-जगमगाती सूरतें वीभत्स हैं कितनी
दिखाया आदमी को आईना हरबार होली ने

चमकते थे जो रंगों से वे कीचड में सने निकले
करी कुछ इस तरह की दिल्लगी दिलदार होली ने

शराफत ओढकर आये थे बेहद शर्म से बोले -
बडा बदरंग तमाशा कर दिया रंगदार होली ने

बडी मुद्दत-जतन से शान से जाजम जमी होगी
उडाकर धूल चलता कर दिया दरबार होली ने

बदलते वक्त ने सारी खुदाई खोदकर धर दी
कभी अर्पित किये थे गर्व से गुलहार होली ने

जरा सी जिद में इज्जत की पिटारी खोल ना देना
नहीं छोडा किसी को यार इज्जतदार होली ने

गीता पे हाथ रखके यहाँ कुछ भी बोल दो

चुपचाप निकल जाओ कोई बात नहीं है
मुंह खोल सको ऐसे अब हालात नहीं है

उन्माद है खुशी है धमाकों का शोर है
मैय्यत है किसी शख्स की बारात नहीं है

खामोश है जो भीड़ के कंधों पे लेटकर
जाहिर है उसकी इनसे मुलाकात नहीं है

माली की हरकतो से बाग बाखबर तो है
परहीन परिन्दों की पर औकात नहीं है

पत्थर जो फेंकता है समंदर में रात दिन
कहता है धमाको में मेरा हाथ नहीं है

वादों के भुलावे मे जी रहे हो इसलिये
कह दो कि पूछने की अब औकात नहीं है

हमसे जवाब आज तक मांगा नहीं गय
हर खत में याचना है सवालात नहीं

गीता पे हाथ रखके यहाँ कुछ भी बोल
माफी है गवाहों को हवालात नहीं

अर्जुन की तरह ठोस सवालात कहां है

उलझाये दिमागों में खयालात कहां है
बीहड में रास्तों के निशानात कहां है

अंधे को अंधेरे ने छकाया है आज तक
किस छोर दिन उगा था हुई रात कहा है

हाकिम की हवेली की तरफ जा तो रहे हो
अर्जी है सिफारिश भी है सौगात कहां है

ढूंढो तो जरा छूत-अछूतों की सूचियां
वोटों के पुलिन्दो में मेरी जात कहां है

बिजली के कडकने से कांपते हो इस कदर
आतिश के बिना सावनी बरसात कहां है

मुर्दे का कफन ओढकर दुबकी है जिन्दगी
जीने के लिये मरने की औकात कहां है

गीता भी कोई कृष्ण उचारे तो किस तरह
अर्जुन की तरह ठोस सवालात कहां है

गीता पे हाथ रखके यहाँ कुछ भी बोल दो

चुपचाप निकल जाओ कोई बात नहीं है
मुंह खोल सको ऐसे अब हालात नहीं है

उन्माद है खुशी है धमाको का शोर है
मैय्यत है किसी शख्स की बारात नहीं है

खामोश है जो भीड़ के कंधों पे लेटकर
जाहिर है उसकी इनसे मुलाकात नहीं है

माली की हरकतों से बाग बाखबर तो है
परहीन परिन्दों की पर औकात नहीं है

पत्थर जो फेंकता है समदर में रात दिन
कहता है धमाकों में मेरा हाथ नहीं है

वादों के भुलावे मे जी रहे हो इसलिये
कह दो कि पूछने की अब औकात नहीं है

हमसे जवाब आज तक मांगा नहीं
हर खत में याचना है सवालात नहीं

गीता पे हाथ रखके यहाँ कुछ भी
माफी है गवाहों को हवालात न.

अर्जुन की तरह ठोस सवालात कहां है

उलझाये दिमागों में ख्यालात कहां है
बीहड में रास्तों के निशानात कहां है

अंधे को अंधेरे ने छकाया है आज तक
किस छोर दिन उगा था हुई रात कहां है

हाकिम की हवेली की तरफ जा तो रहे हो
अर्जी है सिफारिश भी है सौगात कहां है

ढूंढो तो जरा छूत-अछूतों की सूचियां
वोटों के पुलिन्दों में मेरी जात कहां है

बिजली के कडकने से कांपते हो इस कदर
आतिश के बिना सावनी बरसात कहां है

मुर्दे का कफन ओढकर दुबकी है जिन्दगी
जीने के लिये मरने की औकात कहां है

गीता भी कोई कृष्ण उचारे तो किस तरह
अर्जुन की तरह ठोस सवालात कहां है

कल जो बीस था इक्कीस हुआ है

बचपन में सुनी बात का डर बैठा हुआ है
इन भुतहा मकानों के बीच अंधा कुंआं है

पत्थर का लुढकना भी कुछ आभास दे गया
पहले की बनिस्बत ये और गहरा हुआ है

अब तक के हादसों की गवाही के तौर पर
हर प्रेत इस कुंएं से नमूदार हुआ है

कुछ टुकड़े चूडियों के कुछ रंगीन चिंदिया
कहती हैं यहा रात बडा जश्न हुआ है

मंदिर में मिट्ठियों की साड़ियों की नुमाइश
दो दिन से ब्रह्मचारी यहीं ठहरा हुआ है

सूरज की लालिमा को धुंआ लीलता हुआ
कहता है इस शहर में फिर फसाद हुआ है

संसद की घोषणा का इंतजार है ,किसे
हर शख्स कल जो बीस था इक्कीस हुआ है

' अर्थ कोष ' ने सारे अर्थ बदल डाले

पत्थर की मीनारों से रिश्ता रूहानी रखता है
कितना भोला है जो अब भी आंख में पानी रखता है

उडने वाले को धरती के फूल भी क्या कांटे भी क्या
सूखे मे बगियाने की ख्वाहिश बचकानी रखता है

'अर्थ कोष' ने शब्दकोष के सारे अर्थ बदल डाले
परिभाषा लिखने वाला ठप्पा रहमानी रखता है

आज का बच्चा पल में बीसों बार बदलता है करवट
हर करवट के साथ हाथ में नयी कहानी रखता है

हर धोखे में आदम का बेटा सूली चढता आया
अपने युग का हर धोखा सूरत इंसानी रखता है

सब कुछ सुनकर भी गूंगा है जानबूझ कर अंधा है
चौराहे का बुत होकर जीना क्या मानी रखता है

आदमी है या कोई खाली कनस्तर

छत की मजबूती को झुठलाता है अक्सर
खुरदरी दीवार का उखडा पलस्तर

खिडकियां खोलो न दरवाजे उढक दो
सामने वाला कहीं मारे ना पत्थर

मुझसे इज्जतदार है मेरा पडोसी
बीच की मुडेर पर रखता है पत्थर

कौन जाने कब कहां बारीश हो
पहनकर निकला करो लोहे का बख्तर

एक ठोकर क्या लगी बजने लगा
आदमी है या कोई खाली कनस्तर

घर में बच्चों की बला बीवी की बकबक
नींद लेने के लिये अच्छा है दफ्तर

पांच बरसों से वतन सोया हुआ था
आजकल गलियो में चिल्लाता है अक्सर

राह में बेबात गुर्राता रहा जो
घर मेरे रोता हुआ आया है अक्सर

लाख बेहतर हैं हुज्जतें उनकी

हद से बढती हुई हदें उनकी
त्रास देती हैं आदतें उनकी

घर का हर भेद कर गयीं जाहिर
सिर से उड़ती हुई छतें उनकी

हंसते रोते हुए मुखौटों में
छुपी पत्थर सी सूरतें उनकी

जिनके चेहरों से सख्त नफरत है
करनी पडती है मिन्नतें उनकी

कत्ल करतीं भी मुस्करातीं हैं
कितनी बेखौफ हसरतें उनकी

आपके तर्क से जमाने में
लाख बेहतर हैं हुज्जतें उनकी

आप बेशक कम मदारी से नहीं

काग मोती जब से गटकाने लगे
हंस सागर छोडकर जाने लगे

उड गयीं बेजार होकर बुलबुलें
गिद्ध चारों ओर मंडराने लगे

फूल मुरझाये हैं अब कांटे खिले
पतझडी मे भ्रमर भरमाने लगे

मत्त मयूरो को यहां पावस कहां
मेघ भी जब अश्क टपकाने लगे

जंगलों ने की हवाओं से सुलह
बांस क्यों आपस में टकराने लगे

आप बेशक कम मदारी से नहीं
वक्त पर मुर्दों को लडवाने लगे

भीड में आखें चुरा निकले हैं अक्सर
मुंह अंधेरे घर मेरे आने लगे

जिन्दगी फटी हुई किताब सी

कौन-कौन लोग थे किधर गये
मरूधरा के बादलों से छल गये

फटी बिवाइयां जमीन खुरदरी
कदम-कदम निशान थे किधर गये

अड़े कभी अरावली पहाड से
कभी धरा की धूल से बिखर गये

आंख आसमान ताकती रही
पांव कोलतार से पिघल गये

छैनियां बदन तराशती रहीं
हम अनाम मूरतों में ढ़ल गये

तुम बरस-बरस गयी किरण-किरण
हम अचाहे ज्वार से उछल गये

जिन्दगी फटी हुई किताब सी
हम हठात हाशियों में सिल गये

फिर कलाम लिख देगा

कहीं सकून मिले तो पयाम मत देना
रुके न हादसे चलते विराम मत देना

अडा रहा तो किसी लाट सा न उखडेगा
कभी मजूर को पूरे छदाम मत देना

पढा लिखा जो तेरे दस्तखत न मानेगा
किसी भी हाल में लिखकर तमाम मत देना

पकड रहा है जीभ पेट के भुलावे में
कोई खबीस है इसको लगाम मत देना

हजार साल से सत्ता का तकाजा यह कि
ईमानदार को काबिल मुकाम मत देना

उठा है हाथ एक फिर कलाम लिख देगा
कहीं कबीर को मेरा सलाम मत देना

बजाय मौत के जीवन खरीदकर देखो
लगेगी ज्यादा कीमत छदाम मत देना

सारा दिन प्रतिकूल

मैंने कविताएं बनायीं

आंत ने बदली जो करवट
कल्पनायें कुलबुलायीं
पांव से मस्तिष्क तक की
नाडियां सब तिलमिलायीं
फर्ज ने अंगड़ाई लेकर
भावनाओं को झिंझोड़ा
वक्त ने घंटी बजायी
मैंने कविताएं बनायीं।

शब्द बोझिल हो उठे जब
छन्द ने प्रतिबन्ध तोडे
काल की कटु सत्यता ने
रूढ़ियों के बन्द तोडे
गीत ने पीडा संजोयी
प्रीत के अनुबंध तोडे
राग बदला रागिनी ने
साज ने सुरबन्द तोडे
लेखनी चिनगारियों सी
तम-पटल पर झिलमिलायी
आह की आहट सुनी जब
मैंने कविताए बनायीं।

सत्य सृष्टि को समर्पित
स्वप्न का अभिसार कैसा
स्वयं शक्ति साधना, फिर
शक्ति का संचार कैसा
शृंखला मे श्रम बंधा है
कर्म का विस्तार कैसा
मरण धर्मा है मनुज, फिर -
जीने का अधिकार कैसा
जिन्दगी के श्लेष में जब
द्वन्द्व ने हलचल मचायी
खो गया अभिप्राय जिस दिन -
मैंने कविताएं बनायीं।

आंकड़ों ने प्रगति छीनी
रोटियों ने शक्ति छीनी
स्वार्थी भक्ति ने हमसे
वाणि की अभिव्यक्ति छीनी
जागृति ने स्वप्न छीना
सत्य ने अनुरक्ति छीनी
कागजी उपलब्धियों ने
बोझ लादा - मुक्ति छीनी
पांव में कांटे चुभे जब -
दर्द ने आंखें दिखायीं
' सेज ' की सम्भावना में
मैंने कविताएं बनायीं ।

सारा दिन आकुल व्याकुल

सुबह का सूरज शंकाकुल
सारा दिन आकुल व्याकुल ।

पहली किरण चाय की प्याली
अखबारों से आंख खुजाली
टप-टप-टप सरकारी टोटी
लोटा भरा बाल्टी खाली
बाथरूम में घुसकर बैठा
गली का पिल्ला नामाकूल
सुबह का सूरज शंकाकुल
सारा दिन आकुल व्याकुल।

रात रसोई खुली रह गई
बिल्ली सारा दूध पी गई
बापू के ठाकुर जी भूखे
मां की पूजा धरी रह गई
परशुराम हो गये पिताजी
मां खटिया की खुल खुल खुल
सुबह का सूरज शंकाकुल
सारा दिन आकुल व्याकुल।

वेतन के दिन केवल चार
शेष महीना बंटाढार
बच्चे डबल फीस की नोटिस
बीवी मंहगाई की मार
छोटा भाई एम.ए. करके
फांक रहा दर-दर की धूल
सुबह का सूरज शंकाकुल
सारा दिन आकुल व्याकुल।

पस्त पड गया लल्लू जगधर
बदल बदल कर भाडे के घर
कहीं आंत भर मिला न पानी
टप-टप कहीं टपकता छप्पर
सारा शहर सूंघ कर देखा
हर कोना अपने प्रतिकूल
सुबह का सूरज शंकाकुल
सारा दिन आकुल व्याकुल।

दिन विषपायी रातें विषधर
जीवन तृष्णा सांप - छछून्दर
गमनागमन एक ही बिन्दु
घर से दफ्तर दफ्तर से घर
सुबह का पेपर शाम को पढने
बैठा, हुईं बिजलियां गुल
सुबह का सूरज शंकाकुल
सारा दिन आकुल व्याकुल ।

कटारी जैसी लगती हो

(1)

सृष्टि की समग्र रूप कल्पना थी आज मुझे
जिन्दगी की खुरदरी सच्चाई जैसी लगती हो
कभी लगती थी काव्य-छन्द का श्रृंगार रूप
आज पश्चाताप की रूबाई जैसी लगती हो
चम्पा की छडी थी नर्म-नाजुक परी थी
झडबेरी की कंटीली सूखी झाडी जैसी लगती हो
कनक छुरी सी कभी लगी होगी आज मुझे -
जंग लगे लोहे की कटारी जैसी लगती हो।

(2)

'और दिन सिंहनी सा दहाडती हो
वेतन के दिन तुम मुर्गे की बांग बन जाती हो
मदिरा के मद भरे प्याले सी छलकती हो
सिमटके शर्मीली भांग बन जाती हो
नित्य भैंसा राग में अलापती हो, उस दिन
पूर्ण शुद्ध शास्त्रीय राग बन जाती हो
मैं तो 'उपयोगिता का ह्रासमान प्रतिफल'
और तुम 'अंतहीन मांग ' बन जाती हो।

(3)

मैं तो किसी वृक्ष की जड़ों सा उलझा हुआ हूं
कनकलता सी तुम डाल-डाल छाई हो
मैं जीवन - साधना का थका हुआ साधक हूं
और तुम साधना की अनछुई ऊंचाई हो
कुएं की जगत पे उदास बैठा पथिक मैं
तुम अंधकूप की अथाह गहराई हो
घाटे का बजट हूं मैं नित नये टैक्स तुम
मैं तो उपभोक्ता हूं तुम मंहगाई हो।

(4)

जुओं के आवास को जतन से संवारा करो
भूल से पंखेरुओं का नीड बन जायेगा
कीमतों के ग्राफ से भी ऊंचा जूड़ा बांधती हो
देश की तरक्की का प्रतीक बन जायेगा
पेट के प्रसार को विराम दो हे अन्नप्रिये !
आबादी की वृद्धि का सबूत बन जायेगा
श्याम कटि है कि श्याम धन की तिजोरी है ये
भ्रष्टाचारी महकमे का छापा पड जायेगा।

(5)

शीश हिम देश का है भृकुटि पंजाबियों की
उत्तरप्रदेश का इलाहाबादी भाल है
नैत्र नागालैण्ड के जहर भरे तीर हैं तो
अधर बिहार की खानों का कच्चा माल है
कद हरियाणवी है कलेजा मराठियों का
पेट में समाया राजस्थान का अकाल है
तूं सम्पूर्ण भारत का जीवित भूगोल है
अनेकता में एकता की अनूठी मिसाल है।

कल

खुशिया ही खुशियां थीं
धरती की आंखो में
पीपल के पत्तों में
पत्तों की सरगम थी
गदरायी धड़कन थी
बरगद की छाव तले
मैं भी तो धड़का था
तूं भी तो धड़की थी

आज

बदले कैलेण्डर ने
नक्शा ही बदल दिया
सूखे हैं ताल वृक्ष
सूखे खलिहान खेत
सूनी चौपाल को
गिद्धों ने घेरा है
पपड़ायी धरती है
पतझाया पीपल है
बरगद की टहनी भी
बरसों से सूखी है
पथरायी आंखें अब
किस किस से लाज मरे
मैं भी तो भूखा हूं
तूं भी तो भूखी है।

इंकलाब

जब-जब भी पसीने का रंग
लाल हुआ है
समझो कि हक गरीब का
हलाल हुआ है
जिस हाथ में कलम है
कुदाली है फावडा
वह हाथ इंकलाब की
मशाल हुआ है

अंगडाई

बहरी सांझ सवेरा गूंगा
अंधी रात बिताई
खाली पेट खोदती माटी
दिनभर देह पिरायी
आंखों में अंगार, धधकती
ज्वाला सी तरूणाई
महा प्रलय होगा, मजदूरन
जब लेगी अंगडाई

मैं - मेरा अस्तित्व

(1)

प्रश्न सुलझा हुआ था
आपको उलझन लगी होगी
मैं मंदिर में रखा था
आपको मूरत लगी होगी
मैं बाहर था, मैं भीतर था
मगर थे आप धोखे में
मैं जीने में जडा था,
आपको ठोकर लगी होगी

(2)

दुखती आंखों को नाखूनों से
खुजलाया करता हूं
अपने होने का खुद को
विश्वास दिलाया करता हूं
चलते फिरते लोग, किसी के -
दिल की बात नहीं सुनते
इसीलिये पत्थर से थोड़ा -
दिल बहलाया करता हूं

तुम - मैं

यहां हर कोई चुप है
सिर्फ तुम ही बोलते हो
नदीदो की गली में
आंख खोले डोलते हो
तुम्हें दुनिया का
अन्दाजा नहीं है
तभी तो हर जगह
सच बोलते हो

तुम

(1)

जरा सी बात को लेकर
बहुत तकरार करते हो
हमीं से खौफ खाते हो
हमीं पर वार करते हो
बात इतनी सी है कि -
हर कोई कपड़ों में नंगा है
मगर पहने हुओं को -
तुम तो तारमतार करते हो।

(2)

अपाहिज हो, सदा
वैशाखियो को साथ रखते हो
सम्मुख नजरे चुराते हो
पलटकर वार करते हो
बात इतनी सी है -
तुम दूसरे कन्धों पे बैठे हो
मेरी रचना चुराकर
खुद को रचनाकार कहते हो

आप

(1)

गडगडाती हुई एक काली घटा
आंसुओं सी ढलक कर मगर रह गयी
एक मजबूत फौलादी चट्टान थी
हिमशिला सी पिघलकर मगर बह गयी
आप आये तो थे आंधी – तूफान से
धूल तो चार छींटों में ही जम गयी

(2)

आप जब तक रहे सिर्फ सन्नाटा था
महफिलों की सजावट तो अब देखते
सूखी डाली पे बैठे थे पछी अभी तक -
बगीचों की रौनक तो अब देखते
कौन मछली यहां कितने पानी मे है
कितना नीचा धरातल है, अब देखते

वह

(1)

बाजा बजा बजा के
तमाशा दिखा गया
इन फेफडों में दम था
सडक पर बिछा गया
हमने तो फकत भूल से
पर्दा उठाया था
वह तो बडी अदा से
आईना दिखा गया

(2)

वोटों की भीख मांगने
आया था, छल गया
भूखे के पेट का जो
निवाला निगल गया
जब - जब भी अनायास
हाथ से गया इल्म
हडताल आलिमों का एक
अस्त्र बन गया

(3)

कहने को बहुत कुछ था मगर
सिर हिला गया
उसको बचा के
इसको निशाना बना गया
कितना बड़ा कपट था हमें
अब पता चला
हर एक को खरीदकर
बिकना सिखा गया

(4)

जिन्दे को कफन डालकर
मुर्दा बना दिया
इतनी बडी जमात को
ठेगा दिखा दिया
अपनी ही भूल थी जो
जनाजे में चल पडे
दो - चार कदम शेष थे
वापस बुला, लिया

वे

(1)

कहते हैं लोग उनके-
सितारे बुलन्द हैं
लालों के भाग्य उनकी -
मुट्ठियों में बन्द हैं
कल जो मिले थे हमको, तो -
शीशे की ओट में
ऐसा लगा जनाब -
सींखचों में बन्द हैं

(2)

कहते हैं, आजकल वे
बड़े बॉस हो गये
पहले की बनिस्बत जरा
खामोश हो गये
सुनते हैं बहुत गौर से
पर बोलते नहीं
चांदी की चकाचौंध में
मदहोश हो गये

हम

(1)

रिसते हुए नासूर को
नाखून से [illegible]
हम तो कुछ [illegible]
आपने [illegible]
आने [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

हम - अपना परिवेश

(1)

तूफान क्या चला कोई
पत्ता नहीं हिला
कर कट गये जुबान को
लेकिन नहीं गिला
हर डोर किसी और की
अंगुली में बंधी है
इस नाचने वाले को कभी
कुछ नहीं मिला

(2)

जख्मों को अंगुलियों से
सहलाया तो रो पडा
अंधे के हाथ आईना
आया तो रो पडा
इस देश का मजूर है
रबड़ का खिलौना
पुतले को अंगूठे से
दबाया तो रो पडा

(3)

रातें यूं ही फुटपाथ पर
सोकर गुजार दो
दिन दो प्रहर की बात है
रोकर गुजार दो
थोडी सी जिन्दगी है
किसी बोझ की तरह
खुद अपनी लाश पीठ पर
ढोकर गुजार दो

(4)

पराये दर्द को अपने से
बिल्कुल ही अलग रखो
अगर जीना है दुनिया में
हथेली पर जिगर रखो
तुम्हारे ज्ञान की - आदर्श की -
किस को जरूरत है
अगर थोडी सी तिकडम जानते हो
- तो कदम रखो

(5)

कोई कुछ भी कहे
तुम हर तरफ मीठी नजर डालो
रखो विश्वास में सबको
किसी से वैर मत पालो
शर्त प्रतिशोध की पहली कि -
हो संबंध याराना
रखो धोखे में, मौका देखते ही -
कत्ल कर डालो

(6)

घात के प्रतिघात का
आघात तो सहना पडेगा
अनखुले संबंध को भी
खोलकर रखना पडेगा
दुश्मनी ही प्रीत का परिणाम अंतिम -
है अगर, तो -
दोस्तों को दूर से -
आदाब ही कहना पडेगा

(7)

कांपती दरिया की लहरें
देखकर मत कांपिये
साहिल अभी तो दूर है
मंझधार में मत हांफिये
लंबाइयां, चौड़ाइयां
ऊचाइयां नापा किये
अब जरा कुछ देर को
गहराइयां भी नापिये

रेगिस्तानी

निर्जन पथ पर
जर्जर
पीडित
मानव का रथ
चलता जाता है
निष्कण्टक
मन म्लान
दुखित
मुख मलीन
और
दो ज्योतिपुज
हैं व्यथित
मगर -
इस आशा में
टकटकी लगाये बैठे हैं -
हर मोड कहीं तो जाता है
हर पथ मंजिल को पाता है
लेकिन -
वह
भटक-भटक जाता
मृग मरीचिका के आंचल में
पथ खत्म नहीं होता
राही -
रह जाता -
बीच क्षुधित वन में
फिर -

यही मुकद्दर है
अन्तर -ज्वाला मे
जल-जल कर
है सूख गया
आंखों का पानी
वह -
बेचारा रेगिस्तानी ।

ऊंचे -रेतीले ये टीले
कंचन कण जैसे चमकीले
यूं अडे खडे हैं
अकडपंथ
लेकिन हैं
बिल्कुल ही ढीले
यदि सत्य जानना चाहो
तो
डालो तुम इन पर -
एक नजर
संग पवन डोलते फिरते हैं
ये कभी इधर -
तो
कभी उधर
बंजड धरती के पांवों में

प्रोफेसर प्रेमशंकर श्रीवास्तव, श्रेष्ठ साहित्यिक सृजन पुरस्कार

एक परिचय

सुविख्यात शिक्षाविद् तथा उर्दू एवम् अग्रेजी भाषा के प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रो प्रेमशकर श्रीवास्तव 'शकर' का जन्म 18 अगस्त 1918 ई. को उज्जैन मे हुआ था। झालावाड, अजमेर, मेरठ और लखनऊ में शिक्षा प्राप्त कर आपने जसवत कॉलेज जोधपुर मे अग्रेजी के व्याख्याता के उपरात पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज तथा एस. एम. के कॉलेज में प्रोफेसर पद पर अपनी महत्वपूर्ण शैक्षणिक सेवाये अर्पित कीं। वर्तमान में आप–ए–100, कमला नेहरूनगर विस्तार योजना, जोधपुर(राज) मे निवास करते हुए साहित्य–सेवा मे संलग्न हैं।

इन्ही साहित्य साधक ऋषिकल्प आचार्य प्रवर प्रो श्रीवास्तव के नाम पर श्रेष्ठ साहित्य–संवर्द्धन को प्रोत्साहित करने के उदेश्य से उक्त ' श्रेष्ठ साहित्यिक सृजन पुरस्कार' योजना का शुभारभ वर्ष 1997 ई से किया गया। प्रारभ मे इस योजना का कार्य क्षेत्र जोधपुर शहर तक ही रखा गया, पश्चात् प्रतिवर्ष कार्य क्षेत्र का क्रमिक विस्तार करते हुए 1998 ई. में जोधपुर जिला स्तर तथा 1999 ई मे समाग स्तर की साहित्यिक कृतियो को सम्मिलित करते हुए चयनित कृतियों को पुरस्कृत किया गया।

वर्ष 1997 में श्रीमती पुष्पलता कश्यप की काव्यकृति ' धुधले इद्रधनुष पुरस्कृत की गई थी तथा इसी क्रम मे वर्ष 1998 का जिला स्तरीय पुरस्कार श्री अस्त अली खान मलखाण की राजस्थानी काव्यकृति ' वीर बहत्तरी' को दिया गया। वर्ष 1999 का समाग स्तरीय " श्रेष्ठ साहित्यिक सृजन पुरस्कार" पोकरण निवासी एव वर्तमान मे जोधपुर मे रह रहे साहित्यकार श्री नवल जोशी के प्रस्तुत काव्य सग्रह ' साझ–सवेरा रात–दिन' को ससम्मान समर्पित है।

हम सहर्ष सूचित करते हैं कि आगामी वर्ष 2000 ई से उक्त पुरस्कार योजना का कार्य क्षेत्र राज्य स्तरीय रहेगा। इस पुरस्कार योजना के अन्तर्गत उर्दू (देवनागरी लिपि में), हिन्दी, राजस्थानी तथा अग्रेजी , इन चार भाषाओ में सृजित पाडुलिपियो को विचारार्थ स्वीकार किया जाता है।

सृजक स्वय, साहित्यिक सस्थान अथवा लेखक के मित्रजन भी लेखकीय अनुमति के साथ प्रविष्ठि के रूप में पाण्डुलिपि की दो प्रतिया व सृजक का सक्षिप्त परिचय प्रेपित कर सकते हैं। सभी प्राप्त कृतियों क्रे संबंध मे निर्णायक मण्डल के मतानुसार पुरस्कार चयन समिति एक अथवा अधिक श्रेष्ठतम कृतियों का चयन अपने सीमित वित्तीय ससाधनो को ध्यान में रखते हुए करेगी। पुरस्कार की घोषणा के बाद लेखक द्वारा प्रकाशित पुस्तक की दस प्रतिया प्रदान करनी अनिवार्य है। विस्तृत जानकारी हेतु–सचिव, सिटिजन्स सोसायटि फॉर एज्यूकेशन, गुरू श्री शिवदत्त स्मारक (गढी), सिवांची गेट के बाहर, जोधपुर (राज) से सम्पर्क किया जा सकता है।

सी.एस.ई.,जोधपुर द्वारा साहित्य सेवार्थ प्रसारित

ग्रामीण परम्पराओं को मूल भारतीय संस्कृति का संरक्षक माना जाता है। किन्तु आज की महानगरीय सोच और राजनीति की सड़ांध किस तरह ग्रामीण सांस्कृतिक स्वरुप को प्रदूषित करती जा रही है, इसे नवल जोशी का कवि मन न केवल गहराई से महसूस करता है, बल्कि इन स्थितियों को कविताओं में ढाल कर भावी दुष्परिणामों के संकेत भी छोड़ता है। ' सांझ- सवेरा रात- दिन' के कवि का अपना जीवन संघर्षपूर्ण और मर्यादित रहा है। मरुस्थलीय ग्रामीण परिवेश में पले - बढ़े और अपनी शासकीय सेवा का अधिकांश भाग ग्राम्यांचल में बिताने वाले नवल जोशी का ग्रामीण संस्कृति से गहरा जुड़ाव रहा है। आधुनिक युग की तर्ज पर विकास और बदलाव के नाम पर गांवों में फैल रही विकृतियों के प्रत्यक्षदर्शी रहे इस कवि की कविताओं में वर्तमान ग्रामीण दुरावस्थाओं का स्वाभाविक और सटीक चित्रण हुआ है।

'सांझ- सवेरा रात- दिन' की रचनायें अपने तीखे विरोधी स्वर, व्यंजनापरक प्रस्तुति, सुंदर भाषा- शैली, कुशल शब्द सयोजन तथा सहज लय प्रवाह की विशिष्टता के कारण अत्यंत सम्प्रेषणीय और प्रभावी लगती हैं। विश्वास है कि ' प्रो. प्रेमशंकर श्रीवास्तव श्रेष्ठ साहित्यिक सृजन पुरस्कार- 1999' से समादृत नवल जोशी का यह काव्य संग्रह पाठकीय मनमस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ने में अवश्य कामयाब होगा।

-जगदीश शर्मा